

२७/११/७८

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ०५१४९ (६१०)

ग्रंथ नाव रेविय

विषय कथा उराजे



①

॥ श्रीमता द्दमुती बनमः ॥
॥ हरि वि... ॥



Shri. P. Chaturvedi
Dhule and the Kashiya
Society
Dhule

2

श्रीगणेशायनमः॥ जयजययदकुलदिनकरा॥ दृशितकाळाळा वैश्यानरा॥ दि
 तिसुतामर्देनासमरधीरा॥ इंदिरावरागेवीदा॥१॥ सहस्रवक्रादिसहसनयना॥
 तोळनतबोळकांविचक्षणा॥ रसनागेच्याविरोना॥ दोनिसहस्रतयाचे॥२॥
 मगलाजुनचक्षुश्रवा॥ श्यातुशीजाठीरमाधवा॥ निगमबोळकांबरवा॥
 नेतामृजोनितटस्ता॥३॥ व्यासबाल्यापुत्र्यासीनल्यामृती॥ तटस्तारा
 ळीलागीष्यती॥ पचाननाचीवंठीतमृती॥ गुणतुझेवजोवया॥४॥
 तुझेगुणलक्ष्मणाचिदुकाशा॥ तिथेच्यासादिकउपरतिराजहंस॥ केदित
 गेलेउसमास॥ पुत्रचेमृविसिसीमानाही॥५॥ हांच्यापाटीमागंमीशठस॥

विज

१११॥

१११॥

2A

॥ मेदित चाली लाली नक्ष ॥ याची गती न राके स्वयं क ॥ परी ल सृ गति उटा वे ॥ धा
॥ न करो न निराळा च अता ॥ श्रुती जैसी द्वि ज कर मीता ॥ तौ साहरी प्रता पत्त
॥ द सुत ॥ परी यथा विधी वजावे ॥ ७ ॥ कृ पे म गे ज्याचे ग्रह केले ॥ दू बे कृ
॥ मुते के चें र विले ॥ परी सावटी चे मुख्य पुन्य जा गळे ॥ न से जे से
॥ सर्वथा ॥ द्या म् नो न श्री हरी न गुण ॥ वजावे सा पू न ल की मान ॥
॥ आता पू जे अनु संधान ॥ पु के म द्या द्का य जाले ॥ ८ ॥ पृ ष्ठी प्र
॥ जा रू षी जन ॥ कम ठो दू म वा स आ ले शर न ॥ अ करो शे करी लि रू
॥ द न ॥ पी उ लीं जा न दे सा ने ॥ ९ ॥ इ द्रा दि दे व प्र जा सम स्ता ॥ १० ॥

(3)

हरी
२

॥ धेउ नचाळीळ विद्याता ॥ जेथे जसे अपुला जनीला ॥ क्षीराब्धी शाइसर्वे
 ॥ ११ ॥ क्षीराब्धीधि महीसा देसा दृष्टी ॥ वळीतांनसरेवषकोटी ॥
 ॥ तेथेसर्वोसमेतपमेष्टी ॥ नैहतिराउका टाके ॥ १२ ॥ साक्षीराब्धी
 ॥ येमध्येपीट ॥ तेथेप्रकाशका विज्ञाकुबेठ ॥ ध्यान उदागा
 ॥ वसुमठ ॥ लांबरुद्रशोकता ॥ १३ ॥ तेथेनिर्विकल्पत्रिद्वारा
 ॥ गळे ॥ तेथेपाहेसुखआगळे ॥ माहमहतरुयांगळे ॥ शीवविरंची
 ॥ दूळेक ॥ १४ ॥ सुर्यप्रकासीअतिनुन्य ॥ जैसेजेथेप्रवामयपाज्ञान ॥ ॥

विज०
१

॥१॥

॥२॥

3A

॥ गरुडपाचुचे लोतें पूर्ण ॥ प्रकामयविराजे ॥ १५ ॥ दिव्यरत्नचिराजती ॥ लक्ष्यो
 ॥ जने वरवळखीती ॥ सद्यें मंजुपरीसती ॥ वीरपुतटीकाचे ॥ १६ ॥ पदम
 ॥ रागाचे तोंडे स्वयंक ॥ वरी दिव्यहिरीयाचे रविव ॥ निळयाचे उयाळीसु
 ॥ अक ॥ उपमानाद्वितयाची ॥ १७ ॥ जवजा बुनदसुवर्ण ॥ साचे लुलव
 ॥ टलबायमाने ॥ करकमनिवरी देवजाने ॥ सुरससुवासपरी सरती ॥
 ॥ १८ ॥ शुद्धपाचुच्या कीळच्या वरी ॥ जमेदाले पीळ्याकळच्या सरी ॥
 ॥ दिव्यमुक्त्यापंकवरी ॥ जस्यदृढताळासे ॥ १९ ॥ जैसेपंगतिसर्वसंभगसती

(५)

हरी
२

॥ तौ स्याच्चरव्या समान प्रकृती ॥ नानाचक्रयोपदेती ॥ दिव्यरत्नअनेक ॥ २० ॥
॥ मध्यसीकराचा जो कलुस ॥ केदने ठाम हृदाकाश ॥ सहस्रसूर्याचा प्र
काश ॥ येकसंरांत लये तसे ॥ २१ ॥ निजाचे मंदल साजती ॥ वरी मुक्तचे
रास हंस साजती ॥ रजपुवळ्या गति नाचती ॥ असंख्या तांत्रिका
साची ॥ २२ ॥ दाहिजावतार मुवपेता ॥ स्तंभाप्रति जो जीत ॥ ॥
॥ त्रैलोक्यचरै नासंमला ॥ प्रतिमातेथे साजरी ॥ २३ ॥ ॥ ॥

विज०
१

॥ ३ ॥

॥ ३ ॥

(4A)

॥ मं उ पाचे अष्टको निष्पन्नं ॥ सहस्रविजायै सेतेज ॥ त कृपतां तेनेश्च तेज ॥
॥ ब्रह्मा उ संग्रह जाहं ॥ २५ ॥ अनंत ब्रह्म हा सीच्या स्थिती गती ॥ २
॥ रवीलया जनत मुती ॥ त्या मं उ पाची पाहवां स्थिती ॥ चंद्रसूर्य स्व
॥ द्योतवत ॥ २५ ॥ यै सामं उ पलक्यो जन ॥ तितुका उ चंद्रसूर्य
॥ तु दशको न ॥ त्थिता मणी चे सो पा जे पूजे ॥ चंद्र उ स्वतेज ॥ रवी
॥ तया वरीतो तल्पक ॥ तु सत ज्ञा के मायक ॥ जैसा रजता च ल
॥ निष्कलंक ॥ असंभाव परसता ॥ २५ ॥ असक्य ज्यांचे शरीर ॥

5

हरी
१

॥ मंचक योजने साट सहस्र ॥ चतुष्कोणमाचवे परीकर ॥ निज अंगीच्या
॥ शेषाचे ॥ २८ ॥ ठाठ ठाठ उसा बंध वरा ॥ निज अंग चाकरी शेष ॥ ॥
॥ सहस्र फन्याचा छत्र विषेष ॥ प्रकान माय निराकृती ॥ २९ ॥ ले सा श्रे
॥ प्रजाता प्रलंग ॥ वरिप हू जरी रंग ॥ लक्ष योजने अवे ग ॥ वे ब श ॥
॥ ही परमा ॥ ३० ॥ व द्रि नि का चा पर ॥ ३१ ॥ व हू उठा ॥ की पर ब्र म्
॥ र सवोत ठा ॥ म च्छा लगी आ कार ला ॥ निज जं बु वत व जो पै ॥ ३१ ॥
॥ योजन पं ना स सहस्र ॥ स गुण ठी ठा विग्रहि श्री धर ॥ श्री ते म् उतिया

विज ३
१

॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥

5A

॥ सीतलघार ॥ कोठे लसे सांग पा ॥ ३२ ॥ तसे ब्रह्मदपुरी नीक घा उपवधारा ॥ नारद
 ॥ गेला होता क्षीरसागरा ॥ तो पाहू जला मर्वधारा ॥ सुगुची या उपमा प्रती ॥ ३३ ॥
 ॥ दो वरनि ठें घ्यान सुरे स्व ॥ अकानारद मुखाचा श्लोक ॥ पहूला ब्रह्म उनायक ॥
 ॥ क्षीरसागरीकें सातो ॥ ३४ ॥ — — — लक्षाघो जजापें तं विग्रह ॥ कामरूपी जा ॥
 ॥ सर्वो श्रीर्यमयें देवस्य यं शोषत ॥ ३५ ॥ या लगी लक्षाघो जजे प्रमाणा ॥ पहू
 ॥ एतानि कु जी मु व व ॥ कोठी मदनं बो वा कन ॥ नखा वस्तु सं पी तो ॥ ३६ ॥
 ॥ घनशामे व म क न य न ॥ हृदई के सा म प्र भा च ॥ तो पू जे ब्र म स ना त न ॥ ३७ ॥

6

हृत्
२

॥ ह्रीं सागरिपपू उवा ॥ ३६ ॥ श्रीवृंकाकीतमुशने ॥ हृदयैतुअप्रसाधन ॥
 ॥ मुक्तमाकृविराजमान ॥ वैजयंतिअपदा ॥ ३७ ॥ कल्यांतिचे सहस्रजदित ॥
 ॥ तैसीदिव्यमूर्तिप्रकाशवंता ॥ परमज्वालं वंपुंतेतलुपता ॥ मकराकार उअय
 ॥ करणी ॥ ३८ ॥ कल्यांतिन्यास इत्युक्तं पूजा ॥ तैसीमुगुटाकाशधन ॥
 ॥ सरकुनासीकविज्ञाकुनयन ॥ धनुशांतिमुगुटीया ॥ ३९ ॥ वैतुअतेजे ह्रीं
 ॥ रसागर ॥ लखलखत देदिपुदर ॥ नासोवशुरगंभीर ॥ बाकृदिवाका
 ॥ रप्रकाशे ॥ ४० ॥ शंखचक्रगदापद्म ॥ परमउदारमेघःशाम ॥ XXXXX

विज०
१

॥५॥

॥५॥

60

॥ जो पुरान अनत प्रषोतम ॥ पूजे काम सर्वेश ॥ ५॥ चहु सुजां कीती प्रुर्ये ॥ मनग
 ॥ ही छेति दिखे ॥ द्वाज गुकी चंद्रिका जो लफावे ॥ असंख्य नचजे वे ॥ २॥
 ॥ नाकी स्तकी दिव्य कमल ॥ साय चतुसु ज प्रवले बाळु ॥ सहस्र चक्रे कमळ
 ॥ नळु ॥ शोधीता अनहान साप ॥ हरच विजा चय कसार ॥ दीसा
 ॥ नेसठा पीताबर ॥ सा सुधा सेव ॥ परी पूजे घाले ॥ ३॥ हरी तु नु
 ॥ या सुधा सेस पूजे ॥ जाय ब्रह्मा अस दून ॥ कठी मेखळी विराजमान ॥ दिव्य र
 ॥ हासल कतसे ॥ ४॥ माजी हृदयें यरी ॥ जागी लसे दिव्य उरी ॥ ५॥
 ॥ शाम वजे जग जेरी ॥ शोक वंत केसा दिसे ॥ ६॥ सावळे सुये कन्ये चें निर ॥ ७॥

७

हरी
२

॥ सावरी का मीर थीचे रुफ ॥ तैसे जानु जंग शोकता ॥ चांदने जैसे पूजे मेचे ॥ १ ॥

॥ नकाचे गाके का लिले ॥ तैसे जानु जंग शोकेले ॥ चरनि तो ए लखलाळे ॥

॥ वांकीने पूरु नुनडो ॥ ॥ ॥ कोटी बंदूये कवटले ॥ चरण नखीं

॥ सुरवा वळे ॥ की शरीराचे कस वळवळें ॥ दशां गुली जणिले ही ॥ १ ॥

॥ दिव्य मुक्त पलवरु कता ॥ ॥ ॥ सा सीद जागी ताबर स्रकृ कता ॥ पाघर ला

॥ दिना नाथ ॥ शेष श्राद्ध परासा ॥ १ ॥ ॥ सांगी चाघ का श दिपु शी खा पूजे ॥

विज ०
९

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

(२१)

॥ जालिसप्तारुनभेदन ॥ आगीचाप्रकाशघन ॥ सावकुंदिसलसे ॥ ५१ ॥ क्षीर
 ॥ सागरीचाप्रकाशपटीला ॥ तोचमनासीरगचउला ॥ हचसुनिकृतापेका ॥
 ॥ अद्यपयरीदिसलसे ॥ ५२ ॥ क्षीरसागरीजगद्योधार ॥ मदस्मीतवदूनसुंद
 ॥ २ ॥ दंतपंक्तीवेजाकार ॥ सुयकोटीप्रकाशले ॥ ५३ ॥ सर्वआनदाचेसद
 ॥ न ॥ मीळोनयोतिळेहरीचेयदन ॥ वेपटिप्रसादेदिव्यमान ॥ परीतिप्र
 ॥ नोसर्वथा ॥ ५४ ॥ तेंतोजज्ञोमतसज्यकृ ॥ परीस्ठळदृष्टीचेबळ ॥ ॥
 ॥ तिक्ष्णनेपरमसीतळ ॥ पाह्ययातेथेचालेना ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

(४)

हरी
२

॥ तेथे प्रति क्षलक्ष्मी दर्शन ॥ जादि राबी ब विधी सजान ॥ मध्ये द्वी सुये पू
॥ जि ॥ तौ सा रूषी दिसे सते ज ॥ २७ ॥ मन विक्का चे ध्या नी ॥ अगठे साझात
॥ यउनी ॥ याठा गी क्षीर सागरीचे स्वस पनयनी ॥ को ना सी न पाहवे ॥ २८ ॥
॥ असो जातां तो जय श्वरी ॥ क्षीर सागरीचा अंबति ॥ वचां जुळी करुन निर्घोरी ॥
॥ सुरंवर उक्ते टाकले ॥ २९ ॥ पडे मुख्य आदि परमेष्ठी ॥ इद्रादि देव उक्ते मटि ॥
॥ जय जय काराचे बो मटि ॥ रुशी गजलि विरोवेळी ॥ ३० ॥ नमो जादि नारायणा ॥
॥ लक्ष्मी नायका मन मोहना ॥ मह विष्टु मद्र सुदना ॥ कैटकारी के शवा ॥ ३१ ॥ ० ॥

विजो
१

॥ ७ ॥

७१

8A

॥ जयजय वैकुण्ठ पूरविहारा ॥ शेषशाश्विम्बंकरा ॥ पूराणपूरकारमाचरा ॥ ध्वंवेत्तुरे
॥ येवेका ॥ ६३ ॥ जयजय हिरण्यकश्यपमदेना ॥ नमो श्रीविष्णुमवकीर्णना ॥ नमो श्री
॥ अकृष्णकृष्णना ॥ नमो श्रीधरगोविदा ॥ ६४ ॥ नमो श्रीकृष्णकाननदहना ॥ नमो श्री
॥ नकेलनारीहृदयजीवणा ॥ नमो चतुर्भुजाकपालना ॥ पीतावसनामाधवा ॥ ६५ ॥
॥ जयजय कमलनयनाकमलावरा ॥ कमलशयनाकमलपत्रा ॥ कमलनासकम
॥ कृष्णेत्रा ॥ कमलद्वाराकमलश्रीया ॥ ६६ ॥ जयजयविष्णुपालना ॥ विश्वनाथावि
॥ श्ववकारना ॥ विश्वमतीचालकाजगजीवना ॥ विश्वरक्षणविष्णेशा ॥ ६७ ॥
॥ जयजयमठक्षमीकुचकुंभमाका ॥ जयजयसकलदेवपालका ॥ सकलदेववि

(9)

हरी
२

खिज ०
१

गस्ताका ॥ सकळदिक्षागुरु ॥ ६५ ॥ नमो निजिरपटलेखजा ॥ नमो सनकसंतानमन
 ग रजना ॥ नमो दानवकूळनीकृतना ॥ पावकजना हृदयरना ॥ ६६ ॥ नमो मायाच
 ॥ केचाळका ॥ नमो अज्ञानविमीर लामंतका ॥ नमो वेदरुपावेदपाळका ॥ वेद
 ॥ स्थापीका ॥ वेदवंद्या ॥ ६७ ॥ नमो कवगजपंचानना ॥ नमो पापारण्यकूटार
 ॥ लिक्षजा ॥ नेमो त्रीविदपापादाहश्रमना ॥ अनतरुयना अनंता ॥ ६९ ॥ नमो दश
 ॥ शळावतारच त्रीत्रचाळका ॥ नमो अनंतब्रह्मणनायका ॥ नमो प्रधुवैठकाशि
 ॥ प्रदेका ॥ गजेंद्राद्यरकाजगती ॥ ७२ ॥ नमो स्वथास्थस्थीसतकरका ॥
 ॥ नमो वैचल्यपददायका ॥ अजजातीतस्वेका ॥ कसृणा लयासुस्वाही ॥ ७३ ॥

॥ पा

॥ पा

9A

॥ नमो जनन प्रणरोग वैद्या ॥ सचीतानंदासयंवेद्या ॥ प्रायातितात्रगद्व्या ॥
॥ कीदावेदवितंतु ॥ ७४ ॥ नमोनाडुकार रछिता ॥ नमोसकळसद्रनअळ
॥ क्रता ॥ नमोअरीषडुगेरछिता ॥ प्रतापवंतासुरेशा ॥ ७५ ॥ वृशक्षा
॥ चेनकिंवेसन ॥ घालुनफेजिआखंडघण्टा ॥ तैसेंतुजेसडेकरुनी ॥
॥ सकळदेववतेती ॥ ७६ ॥ तज्ञरारघरुनशासन ॥ वतोतुज्ञाअज्ञा
॥ पाळोन ॥ अैसेंअसतांदेयंविघ्ना ॥ पृथ्वीवरीमाडिळि ॥ ७७ ॥ ॥
॥ कैसचानुरदैसमाजडे ॥ काळुयवनेयज्ञमोजिडे ॥ जरासुंधेधो
॥ रपीउळे ॥ बंदिघातळेकृपवर ॥ ७८ ॥ मारीळेगाघब्राम्हण ॥ ४४४

10

हरी
१

त

॥ विष्णुकेतुता वोऽविलेविघ्न ॥ धर्मदाकीलेमोऽन ॥ पृथ्वीसंपूर्णग जीती ॥
 ॥ ७५ ॥ जैसे सोयासक्यविचार ॥ तुंदाजिवजगद्धार ॥ जैसे बोलोन विधीसुर ॥
 ॥ १ ॥ टहा रूपपाहती ॥ दो तो हीरसागरहनी ॥ उटही अंतराहृदयनी ॥
 ॥ नाकीनाकी मृगोनी ॥ चोता प्रतीकंताके ॥ ॥ मीयादव कूळीजवता
 ॥ १ ॥ घेउन करीन दृष्टाचा संकार ॥ उ म्ही देव समग्र ॥ यादव ही दुनी
 ॥ जन्माचे ॥ ८२ ॥ धर्मसमारसहरज नयन ॥ अश्वनि देव दोघे
 ॥ जन ॥ छिं वृंति उदरी अवतरुन ॥ कुस्कार हरज करावे ॥ ८३ ॥ ॥

विज ०
१

॥५॥

॥५॥

108

॥ ब्रह्मते द्वापकवे ॥ द्यावे पां उ वा स विद्या दान ॥ अग्निने क्वावे दृष्ट दमन ॥ पांचाळीचे नि
 ॥ जजागी ॥ ८५ ॥ आणी कले उप देव सकल ॥ तेथे गी क्की क्वावे गो पा क् ॥ रूचीने
 ॥ चळे हो उन सकल ॥ नीपाकी न उ इ रीने ॥ ८६ ॥ क्कळ ह मा ज वा वा आ धी ॥ पार
 ॥ व ति ह्ये ठ ल दे प दि ॥ रुक्मिणी ठ ह्य मी नी सु धी ॥ वे द्क उ द री अ व त रे ॥ ८७ ॥
 ॥ बळी अ द्र ह्ये ठ ल सं क षे न ॥ मी वा सु दे व दो धे ज न ॥ सा चे पो री अ व त रू न ॥
 ॥ करी न पा व न ते या सी ॥ ८८ ॥ ति न अ न्म न य त ॥ ति छि त प वे ले ब हू त ॥ ते फ क् ॥
 ॥ आ ले स म स्त ॥ मी ह्ये ठ न सु त सा चा ॥ ८९ ॥ अै सी अं त री ह्ये हो वां ह्यं नी ॥ ९० ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com